18

घर जहां आत्मा वास करता है ...

घर में कृपा

(गलातियों 5:22, 23)

मसीही परिवार खुशहाल या सफल घर कैसे हो सकता है? यह सुनिश्चित करके कि उस घर में पवित्र आत्मा का फल मिल रहा है। कैसा फल? गलातियों 5:22, 23 कहता है, ''पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम है; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।''

घर जहां आत्मा का वास है वह प्रेम, आनन्द, शान्ति और धीरज (या सहनशीलता) से परिपूर्ण हैं और ये विशेषताएं भरपूर घर बनाने में सहायक हैं। इसके अलावा, आत्मा के वास वाला घर मजबूत और स्वस्थ है, क्योंकि इसकी पहचान जैसा कि NASB और अन्य संस्करण ''दया'' और KJV इसे ''विनम्रता'' कहता है के रूप में है।

कृपा की खूबी

अनुवादित शब्द ''कृपा'' (विनम्रता; KJV) यूनानी भाषा के शब्द *chrestotes* से लिया गया है। नये नियम में इस शब्द के रूप दस बार मिलते हैं, पर KJV में इसका अनुवाद यहां केवल ''विनम्रता'' किया गया है। KJV में नौ बार इस शब्द का अनुवाद ''अच्छा'' (एक बार), ''भलाई'' (चार बार) और ''कृपा'' (चार बार) हुआ है। अन्य अनुवादों में इसका अधिकतर अनुवाद ''दया'' हुआ है (वेमाउथ; फिलिप्स; RSV; NRSV; NASB; NEB; NIV)। डब्ल्यू. ई. वाइन ने कहा है,

> [*Chrestotes* शब्द] (*क*) जो सीधा, धर्मी है उसके अर्थ में, रोमियों 3:12 (अनुवाद हुआ ''अच्छा''); (*ख*) मन या काम की करुणा के अर्थ में, परमेश्वर के लिए, रोमियों 2:4; 11:22 (तीन बार); इफिसियों 2:7 (कृपा); तीतुस 3:4 (''कृपा''); विश्वासियों के लिए कहा गया और ''कृपा'' लिखा गया, 2 कुरिन्थियों 6:6; कुलुस्सियों 3:12; गलातियों 5:22 ... ''भलाई'' का संकेत देता है।[1]

गलातियों पर अपने अध्ययन में, सी. एफ़. हॉग और डब्ल्यू. ई. वाइन ने *chrestotes* की परिभाषा इस प्रकार दी है:

> ... भलाई पर केवल गुण के रूप में भलाई नहीं, बल्कि यह काम भलाई अर्थात कामों में अपने आप दिखाई देती भलाई है; फिर भी अपने आपको आपके विरुद्ध रोष व्यक्त करती भलाई नहीं क्योंकि रोमियों 11:22 में इसे कठोरता से अलग किया गया, बल्कि करुणा में भलाई है।[2]

एक व्यक्ति के दूसरे के प्रति काम पर लागू करने पर इस शब्द का बढ़िया अनुवाद ''कृपा'' है।

कृपा की आवश्यकता

आत्मा का यह गुण खुशहाल परिवार के लिए आवश्यक है। वास्तव में घर में मधुर सम्बन्धों के लिए कृपा मुख्य बात है। ''मसीहियत क्या है?'' पर एक प्रवचन में डेविड रोपर ने कहा, ''घर में मसीहियत का अर्थ कृपा है।''[3] बिल्कुल सही था। हमें घर में कृपा की आवश्यकता है।

क्यों? क्योंकि परिवार का हर सदस्य ही एक-दूसरे को उठाने के लिए इतना धीरजवन्त हो सकता है, जिससे घर स्थिर रहे और फिर भी घर बहुत अप्रिय स्थान हो सकता है। परिवार का हर व्यक्ति मसीही हो सकता है, जिसका परिणाम यह हो कि घर कुछ हद तक शान्ति वाला हो सकता है। पर खुशहाल परिवार में ऐसा नहीं होता। घर स्थाई होने के बावजूद स्थाई तौर पर कठोर और चेतावनी देने वाला हो सकता है। यह वह स्थान हो सकता है जहां कोई मुस्कुराता नहीं, जहां कोई अन्दर से खुश नहीं है, बल्कि उस घर को इकट्ठा रखने के लिए केवल रूखा इरादा है। किसी दम्पत्ति का व्यवहार ऐसा हो सकता है, जिसे इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है: ''मैं इस विवाह [या परिवार] से जुड़ा रहूंगा या रहूंगी क्योंकि मैं बेबस हूं, पर मुझे यह पसन्द नहीं है।''

एक घर में ऐसी स्थिति हो सकती है जहां पति या पत्नी सुबह बिस्तर में उठते हुए, दांत कटकटाते हुए कहता या कहती है, ''अरे नहीं, विवाह का एक और पल नहीं! मुझे नफ़रत है, मैं मजबूर हूं! मुझे रहना ही पड़ेगा, पर मुझे कोई खुशी नहीं है!'' फिर दोनों दिन-भर त्यौरियां चढ़ाकर एक-दूसरे को घूरते रहते हैं। फिर कइयों के लिए विवाह के एक और दिन का सामना करना काम के लिए सुबह बहुत जल्दी उठ जाने या डॉक्टर के पास जाने जैसा यानी कुछ ऐसा हो सकता है जो किया तो जाना है पर है गलत, जिसमें आनन्द की कोई उम्मीद नहीं है।

अपने घर को इरादे के अलावा कुछ और न करके अपने परिवार को इकट्ठा रखने के लिए लड़ाई का अखाड़ा बनने से कैसे रोका जा सकता है? *गुणात्मक मानवीय सम्बन्ध* ऐसी परिस्थिति को रोककर घर को खुशहाल जगह बना देंगे। ऐसे सम्बन्ध कैसे बनते हैं? पति या पत्नी, माता-पिता या बच्चों के साथ अच्छा सम्बन्ध रखने के लिए क्या आवश्यक है? अधिक प्रौढ़ होने के बावजूद विवाह का सम्बन्ध वास्तव में किसी भी अन्य मानवीय सम्बन्ध से अलग नहीं है। जो गुण हमें मित्र बनाने और विवाह के बाहर व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाए रखने के योग्य बनाते हैं वही घर में अच्छे सम्बन्ध को बढ़ावा देंगे।

वे कौन सी खूबियां हैं जिन से कहीं पर भी अच्छे मानवीय सम्बन्ध बनते हैं? उन में से एक खूबी कृपा है। कृपा को एक गौण गुण कहा जाता है पर मसीही लोगों को इसे मुख्य गुण के रूप में देखना आवश्यक है, विशेषकर घर में। इफिसियों 4:32 कहता है, ''एक-दूसरे पर कृपाल, और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी दूसरे के अपराध क्षमा करो।''

कृपा की प्रासंगिकता

विशेषकर हमें घर में तीन प्रकार से कृपालु होने की आवश्यकता है।

न्याय में कृपालु

घर में हमें न्याय में कृपालु होना चाहिए। हमें दूसरों के बारे में *दया से विचार करना* सीखना आवश्यक है। हम दूसरों पर दोष लगाने से इनकार करके न्याय में कृपालु हो सकते हैं। यीशु ने कहा, ''दोष मत लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए'' (मत्ती 7:1)। निश्चित रूप में वह यह नहीं कह रहा था कि हमें दूसरों के कामों का कभी मूल्यांकन नहीं करना चाहिए। तो फिर वह क्या कह रहा है? (क) हम दूसरों की कमियों के कारण डांटने फटकारने के समय अपनी कमियों को अनदेखा नहीं करते (मत्ती 7:3-5)। (ख) दूसरों पर दोष लगाने के लिए हमें उससे अलग मापदण्ड नहीं बरतना चाहिए जो हम अपने ऊपर लगाते हैं। (ग) हमें दूसरों की मंशा पर दोष नहीं लगाना चाहिए। (घ) हमें दूसरों के अपने अवलोकन में आवश्यकता से अधिक आलोचनात्मक या बहुत कठोर नहीं होना चाहिए।

घर में हम न्याय करने में कैसे कृपालु हो सकते हैं? तीन सुझाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण लगते हैं।

1. *हमें अत्यधिक आलोचक, यानी अति कठोर नहीं होना चाहिए।* पौलुस के मन में शायद ऐसी ही ताड़ना थी जब उसने लिखा, ''अपने बच्चों को रिस न दिलाओ'' (इफिसियों 6:4; देखें कुलुस्सियों 3:19)। दोनों के सम्बन्धों में यह, विशेषक उनके लिए जो अगुवे हैं, यह बहुत ही आवश्यक है कि दूसरों की आवश्यकता से अधिक आलोचना नहीं करनी चाहिए।

2. *इसके विपरीत हमें परिवार के लोगों की बेहतरी के लिए सोचना चाहिए।* हमें दूसरों की कमियों या कमज़ोरियों पर नहीं, बल्कि उनकी सामर्थ पर ध्यान देना चाहिए। हमें उन्हें अच्छे लोग मानना आवश्यक है। यदि हम उनसे बेहतर की उम्मीद करते हैं, तो वे हमारी उम्मीदों पर खरा उतरे। अपने आप पूरी होने वाली भविष्यवाणी जैसी एक बात है। एक आदमी को अपने बेटे के बारे में कुछ कहने की बुरी आदत, ''यह जॉय है, शहर का सबसे गन्दा लड़का।'' मेरे डैडी जान-बूझकर यह कहते, ''यह जॉय है, शहर का सबसे अच्छा लड़का।'' हमें यह सुझाव नहीं देना चाहिए कि हमारे बच्चे ''बुरे'' हैं। बच्चे को डांटने का बढ़िया ढंग यह कहना है, ''तेरे इस काम से मुझे निराशा हुई।''

3. हम दूसरों की मंशा पर दोष नहीं लगा सकते। अपने बच्चों के साथ व्यवहार करते हुए हमें लग सकता है कि हमें पता है कि जो कुछ उन्होंने किया वह क्यों किया (और कई बार हम सही हो सकते हैं), पर हमें पक्का पता कभी नहीं चला। हमें उनकी मंशाओं के साथ नहीं, बल्कि उनके व्यवहार के साथ पेश आना चाहिए। जब हम अपनी पत्नी या पति से किसी ऐसी बात पर बात कर रहे हैं जो हमें स्वीकार नहीं, या हम किसी बात पर असहमत हैं, तो हमें जल्दबाजी में निर्णय लेने से बचना होगा। हमें यह कभी नहीं मानना चाहिए कि ''उसने मुझे परेशान करने के लिए किया,'' या ''उसने मुझे चिड़ाने के लिए किया।'' हमें मंशा पर नहीं, बल्कि व्यवहार पर ध्यान लगाना चाहिए।

बात करने में दयालु

घर में हमें *बात करने में दयालु* होना आवश्यक है। हमें दूसरों के साथ और दूसरों के बारे में *दयालुता से बात करनी* चाहिए, यानी परिवार के लोगों से अपनी बात कहने या कहने के ढंग

में चौकस होना चाहिए। घर में हमें वह आजादी मिल सकती है जो कहीं और नहीं मिल सकती पर हमें इतने भी आजाद नहीं समझना चाहिए कि हम जो चाहें कह सकते हैं और जैसे चाहें कह सकते हैं। कुछ बातें कहने के ढंग से ही मामले बिगड़ जाते हैं। गलत बात को गलत ढंग से कहना पति और पत्नी के बीच सम्बन्ध को सदा के लिए बिगाड़ सकता है।

इसके अलावा परिवार के लोगों को अपनी बातों की भी चौकसी करनी चाहिए क्योंकि कुछ बातें न ही बोली जाएं तो अच्छा है। उदाहरण के लिए पति या पत्नी किसी को भी विवाह से पहले के अपने किसी सम्बन्ध की बात करने की आवश्यकता नहीं है।[4] सवाल यह नहीं है कि ''यह पाप गुप्त न रख पाने पर मुझे अच्छा लगेगा?'' बल्कि यह है कि ''क्या यह बताने से सहायता मिलेगी?'' ऐसा अंगीकार सम्बन्ध को मज़बूत, साथी को प्रोत्साहित या विवाह की सहायता नहीं करेगा।

परन्तु सम्भवतया हम जो चाहें वह कहने को आजाद नहीं लग सकते क्योंकि बाइबल हमें बात कहने और कहने के ढंग के प्रति चौकस करती है:

> याकूब 3:6—''जीभ एक आग है।'' (उसका तात्पर्य है कि मसीही लोगों को जीभ को काबू करने की पूरी कोशिश करनी चाहिए।)
>
> मत्ती 12:36, 37—''और मैं तुमसे कहता हूं, कि जो भी निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन एक एक बात का लेखा देंगे। क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा।''
>
> कुलुस्सियों 4:6—''तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सलोना हो, कि तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से उत्तर देना आ जाए।''
>
> इफिसियों 4:29—''कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिए उत्तम हो, ताकि उस से सुनने वालों पर अनुग्रह हो।''
>
> नीतिवचन 15:1—''कोमल उत्तर सुनने से जलजलाहट ठण्डी होती है, परन्तु कटुवचन से क्रोध धधक उठता है।''

हम घर में दयालुता से कैसे बोलेंगे?

हम शिष्टाचार से भरे शब्दों में बात करते हैं। घर में ''कृपया'' और ''धन्यवाद'' और ''क्षमा करना'' जैसे शब्दों का इस्तेमाल सिखाया जाना चाहिए।

हम प्रशंसा की बातें बोल सकते हैं। हम सब अपने आप ऐसे प्रश्न पूछ सकते हैं: ''पिछली बार कब मैंने अपनी पत्नी की तारीफ़ करते हुए कब कहा था कि वह सुन्दर लग रही है या वह कितना अच्छा खाना बनाती है?''; ''अन्तिम बार मैंने अपने बच्चे को कब बताया था कि मैं उसकी तारीफ़ करता हूं?''; ''अन्तिम बार मैंने अपने पति से कब कहा था कि मैं उसकी तारीफ़ करती हूं कि वह दिन भर कितनी मेहनत करता है?'' तारीफ़ के सच्चे बोलों से बढ़कर जीवन

और किसी बात से सुखद नहीं बनता।

हम प्रोत्साहन की बातें कह सकते हैं। घर एक ऐसा स्थान होना चाहिए जहां लोग प्रोत्साहन की बातें सुनते रहते हैं। परन्तु परिवार के लोग आमतौर पर एक-दूसरे से निराशाजनक बात करते रहते हैं। हम देख सकते हैं कि बच्चों के खेलते समय उनके माता-पिता उनसे कैसे बात करते हैं। वे उन्हें प्रोत्साहन देने वाली या निराश करने वाली बात करते हैं? कई पति/पत्नी और माता-पिता अपने बच्चों के साथ अपमानजनक और ताने देने वाली बातें करते हैं। इससे कम दयालुता वाली कोई बात नहीं।

हम दिलचस्पी और लगाव की बातें बोल सकते हैं। स्कूल में छात्रों के बीच यानी सफल होने वालों और छोड़ जाने वालों में अन्तर उदाहरण के लिए, आम तौर पर माता-पिता के उनके स्कूल के काम में दिखाई गई दिलचस्पी से आता है। घर में जो कुछ कोई कर रहा है उस पर एक-दूसरे को जोश दिलाने वाली बातें करना आवश्यक है।

हम आराम से, गम्भीरता से और प्रेम से बात कर सकते हैं। बोलने का ढंग शायद मुद्दे से अधिक महत्वपूर्ण न हो, पर यह आवश्यक है। इसलिए हमें अपनी आवाज़ के सुर को प्रेम से बात करने वाली बनाने का सचेत प्रयास करना चाहिए। बातचीत करने की विभिन्न शैलियों को ध्यान में रखने के बावजूद घर में लगातार चीखना-चिल्लाना दयालुता का माहौल नहीं बनाता।

कामों में कृपालुता

घर में हमें *कामों में दयालु* होना भी आवश्यक है। हमें दूसरों के प्रति *दयालुता से काम* करना चाहिए। किसी ने कहा है, ''घर वह स्थान है जहां हम से बेहतरीन ढंग से व्यवहार किया जाता है और बदतर ढंग से काम किया जाता है।'' कुछ पुरुष और स्त्रियां दिन भर बाज़ार में काम करके और हर मिलने वाले से बड़े प्यार से और शिष्टाचार से बात करते हैं, पर रात को अपने प्रियजनों के पास घर पहुंचने पर वे बदतमीजी से काम करते और परिवार के हर व्यक्ति से चिड़ते और रुखा व्यवहार करते हैं ''हे मेरे भाइयो, ऐसा नहीं होना चाहिए'' (याकूब 3:10)। जैसा हम दूसरों के प्रति कार्य करने में चौकस होते हैं वैसे ही हमें घर के दूसरे लोगों के प्रति काम करना चाहिए। काम में क्या दयालुता है?

भाई जे. सी. बेली ने[5] दयालुता के उदाहरण के रूप में उस अवसर का इस्तेमाल किया जिस पर एबेदमेलेक ने यिर्मयाह को कीचड़ के गड्हे से बचाया था।

> उस समय राजा बिन्यामीन के फाटक के पास बैठा था सो जब एबेदमेलेक कूशी ने जो राजभवन में एक खोजा था, सुना, कि उन्होंने यिर्मयाह को गड्हे में डाल दिया है तब एबेदमेलेक राजभवन से निकलकर राजा से कहने लगा, हे मेरे स्वामी, हे राजा, उन लोगों ने यिर्मयाह भविष्यक्क्ता से जो कुछ किया है वह बुरा किया है, क्योंकि उन्होंने उसको गड्हे में डाल दिया है; वहां वह भूख से मर जाएगा क्योंकि नगर में कुछ रोटी नहीं रही है। तब राजा ने एबेदमेलेक कूशी को यह आज्ञा दी कि यहां से तीस पुरुष साथ लेकर यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को मरने से पहिले गड्हे में से निकाल। सो एबेदमेलेक उतने पुरुषों को साथ लेकर राजभवन के भण्डार के तलघर में गया; और वहां से फटे-पुराने कपड़े और चिथड़े लेकर यिर्मयाह के पास उस गड्हे में रस्सियों से उतार दिए। और एबेदमेलेक

> कूशी ने यिर्मयाह से कहा, ये पुराने कपड़े और चिथड़े अपनी कांखों में रस्सियों के नीचे रख ले। सो यिर्मयाह ने वैसा ही किया। तब उन्होंने यिर्मयाह को रस्सियों से खींचकर, गड्ढे में से निकाला। और यिर्मयाह पहरे के आंगन में रहने लगा (यिर्मयाह 38:7-13)।

भाई बेली ने कहा कि कृपा उन चिथड़ों में दिखाई देती है जो एबेदमेलेक ने यिर्मयाह को अपनी त्वचा और रस्सी के बीच डालने के लिए दिए थे। इसका अर्थ यह हुआ कि कृपा वह अतिरिक्त बात यानी ''दो मील जाना'' (देखें मत्ती 5:41) है जो दूसरों के लिए जीवन आसान और अधिक आनन्ददायक बना दे।

अपने बच्चों के प्रति ''कृपा'' ...

- उनके साथ समय बिताना है,
- उनके साथ खेलना है,
- उन्हें अपने साथ घुमाने ले जाना है,
- उनकी चोट को चुमना है,
- सही काम न होने पर चिल्लाने के लिए उन्हें कंधा देना है,
- असफल हो जाने पर उन्हें प्रोत्साहन देना और क्षमा करना है।

इन में से एक भी बात माता-पिता होने की कोई विशेष ज़िम्मेदार नहीं है। हम अपने बच्चों को इनके बिना भी खाना और कपड़ा और यहां तक कि आत्मिक अगुआई दे सकते हैं तौभी ऐसी चीज़ें देना कृपा ही है और यह हमारे साथ-साथ हमारे बच्चों के लिए भी प्रतिफल देने वाला है।

पति या पत्नी के प्रति कृपा इस प्रकार से दिखाई जा सकती है:

- प्राप्तियों को पहचानना और संकटों और असफलताओं को भूल जाना,
- हमेशा उसका हौसला बढ़ाना, कभी निराश न करना,
- वैसा ही खाना बनाना जैसा उसे पसन्द है,
- ऐसी जगह जाना जहां उसे जाना अच्छा लगता हो,
- ''आई लव यू'' कहना,
- विशेष तरह से प्रेम दिखाना।

और किसी भी बात से बढ़कर कृपा शायद विचारवान होना है। विवाह के कई विशेषज्ञ पति को उसी रोमांस को बनाए रखने की सलाह देते हैं जो विवाह में आमतौर पर पहले पहल होता है-अपनी पत्नी को छोटे-छोटे उपहार देना, उससे ''प्रेम जताना।'' बेशक इससे पत्नी को अच्छा लगेगा। परन्तु जो बात उसे सबसे अच्छी लगती है, हो सकता है कि वह पति ने वैसे न की हो जिसे ''रोमांटिक'' होना कहा जाता है, इसी से कि उसने उसका ध्यान किया है और उसके लिए केवल इसलिए कुछ किया है कि उसे यह अच्छा लगेगा। ऐसे देने में (उदाहरण के लिए, पति द्वारा अपनी पत्नी के लिए वह चीज़ खरीदना जिसे वह अपने लिए इस्तेमाल करना चाहता है) स्वार्थ नहीं है। सम्भवतया पति कुछ ऐसा कर सकता है जिसे आमतौर पर रोमांटिक होना नहीं बल्कि केवल अपनी पत्नी के लिए विशेष कार्य माना जाए। केवल यह दिखाने के लिए कि उसे उसका ध्यान है-और उसे वैसे ही अच्छा लगे। इस बात का महत्व नहीं है कि वह अपनी पत्नी

के लिए उपहार लाता है या नहीं बल्कि उसकी भलाई के लिए विचारवान होना, ध्यान करना और उसकी परवाह करना भी उतना ही *महत्वपूर्ण है*।

तो फिर, कृपा यह पूछना है, ''इस समय मेरी पत्नी की क्या आवश्यकता है जो मैं उसे दे सकता हूं?'' या ''मैं आज अपने पति की आवश्यकता को पूरा करने के लिए कैसे सहायता कर सकती हूं?'' (देखें उत्पत्ति 2:18, 20; KJV।) छोटी-छोटी कृपा में निम्न बातें हो सकती हैं:

- उसके लिए कोई चीज़ खरीदना या बनाना जिसकी उसे आवश्यकता हो।
- घर के कामकाज में सहायता करना।
- उसके साथ बात करने और सचमुच में उसकी सुनने के लिए समय देना।
- इकट्ठे समय बिताना।

ये सभी काम कृपालुता के हो सकते हैं। ये छोटी-छोटी बातें है जिनका विवाह के सम्बन्ध में बड़ा महत्व है।

सारांश

क्या आप कभी हैरान हुए हैं कि घर में, लोगों में हम सबसे अधिक प्रेम क्यों करते हैं, कि हमारी सबसे बड़ी बहसें और सबसे बड़े झगड़े क्यों होते हैं? यह तथ्य हैरान करने वाला नहीं होना चाहिए क्योंकि हम अपने परिवारों के साथ मिलकर रहते हैं-इतना निकट कि दूसरा कोई भी सम्बन्ध ऐसा नहीं है। जब भी लोग आस पास इकट्ठे रहेंगे, मतभेदों पर ध्यान अधिक जाएगा। दो पहियों को अलग-अलग घुमाने से उनमें कोई झगड़ा नहीं होगा पर यदि आप उन्हें इकट्ठा कर दें तो झगड़ा होगा। इसी प्रकार जब लोग इकट्ठा रहते हैं, तो झगड़े की सम्भावना बढ़ जाती है।

हम झगड़ों को कम या खत्म कैसे कर सकते हैं? कृपा वह तेल है जो झगड़े को कम कर देगी या इसे खत्म कर देगी। कृपा की उदार प्रासंगिकता से झगड़ा मिटाना हमारे लिए घर में खुशी से इकट्ठे रहना सम्भव बना देगा।

टिप्पणियां

[1]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एण्ड विलियम वाईट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविले: थॉमस नैल्सन पब्लिशर्स, 1985), 274. [2]सी. एफ़. हॉग एण्ड डब्ल्यू. ई. वाइन, *द एपिस्टल टू द गलेशियंस* (ग्रैंड रैपिडस, मिशिगन: क्रेगल पब्लिकेशन्स, 1921), 292. [3]डेविड रोपर, ''व्हट इज़ क्रिश्चियनिटी?'' *द प्रीचर'स पीरियोडिक्ल* 3 (अगस्त 1982): 21. [4]स्पष्टतया, अवैध सम्बन्ध पाप है। विवाह के बाहर शारीरिक सम्बन्ध बनाने वाले मसीही को उस पाप के लिए क्षमा प्राप्त करनी आवश्यक है। परन्तु विवाह से पूर्व किए गए पाप के लिए क्षमा पाने के लिए उसके सामने जिससे उसका विवाह हुआ है अपने पाप को मानने की आवश्यकता नहीं है। बेशक, यदि किसी को गुप्त रोग हो, तो उसके साथी को उनके विवाह से पूर्व इस तथ्य से अवगत कराया जाना चाहिए। [5]जे. सी. बेली, वेबर्न, ससकेचुअन, कनेडा में 1960 के दशक के आरम्भ में दिया गया प्रवचन।